International Journal of Creative Research and Innovation (IJCRI)
Vol-6, Issue-6, 2021 | ISSN: 2581-6829 ;http://www.edusanchar.com

शोध पत्र

''राजस्थान के प्रमुख सम्भागों के माध्यमिक स्तर के दिव्यांग छात्र–छात्राओं की आत्मसन्तुष्टि एवं समायोजन का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

शोधकर्ता — **अशोक कुमार शर्मा**

मार्गदर्शिका — **डॉ. सावित्री सिंगवाल**

प्रस्तावना –

"मन से सबल, सशक्त, सारंग वों, उत्साह, उत्कर्ष, उमंग वो,
उन्हें तुम, हौसला, हिम्मत हुँकार दो, दिव्य दिव्यांग देवांगवो।"

मनुष्य द्वारा किये गये प्रत्येक कर्म का फल उसे अवश्य मिलता हैं, चाहे वह किसी भी क्षेत्र में किए गए कर्म हो। यदि किसी कार्य को करने से पूर्व विचार मंथन कर उसके उद्देश्य निर्धारित कर लिए जाए तो किए गए कर्म, सुकर्म बनकर निर्धारित उद्देश्य प्राप्ति में सहायक होगें और वांछित निष्कर्षो तक कर्मो को ले जाऐंगे। इसी रूप में शोध के क्षेत्र में किए गए कार्य के लिए, किसी भी विषय पर खोज करने के लिए उससे सम्बन्धित तथ्यों को एकत्रित किया जाता हैं, तथा उसका विश्लेषण व्याख्या आदि करके निष्कर्षों तक पहुँचा जाता हैं इसीलिए प्रत्येक शोधार्थी अध्ययन से पूर्व प्राकल्पनाओं का निमार्ण कर उसकी

स्वीकृति–अस्वीकृति की जाँच कर अपनी शोध जिज्ञासा को शांत करता हैं।

एक शैक्षिक अनुसंधानकर्त्ता को अपने प्रदत्तों के आधार पर निष्कर्ष निकालते समय पूर्ण सावधानी व सतर्कता की आवश्यकता होती हैं। साथ ही परिणामों की व्याख्या के समान ही निष्कर्ष एवं सामान्य नियमों का निरूपण करते समय सूक्ष्म निरीक्षण, विस्तृत दृष्टिकोण तथा तर्क संगतता, चिन्तनशीलता व समुचित प्रस्तुतीकरण की आवश्यकता होती हैं।

समस्या कथन

" राजस्थान राज्य के माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की आत्मसन्तुष्टि एवं समायोजन का अध्ययन"

शोध उद्देश्य

(i) राजस्थान राज्य के माध्यमिक स्तर के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं की आत्मसंतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(ii) राजस्थान राज्य के माध्यमिक स्तर के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(iii) राजस्थान राज्य के 9 वीं कक्षा के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं की आत्मसंतुष्टि का अध्ययन करना।

(iv) राजस्थान राज्य के 10 वीं कक्षा के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं की आत्मसंतुष्टि का अध्ययन करना।

(v) राजस्थान राज्य के 9 वीं कक्षा के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।

(vi) राजस्थान राज्य के 10 वीं कक्षा के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

(i) राजस्थान राज्य के माध्यमिक स्तर के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं की आत्मसंतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

(ii) राजस्थान राज्य के माध्यमिक स्तर के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

(iii) राजस्थान राज्य के 9 वीं कक्षा के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं की आत्मसंतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(iv) राजस्थान राज्य के 10 वीं कक्षा के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं की आत्मसंतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(v) राजस्थान राज्य के 9 वीं कक्षा के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

(vi) राजस्थान राज्य के 10 वीं कक्षा के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

शोध विधि –

प्रस्तुत अध्ययन समूह पर आधारित है। अतः सर्वेक्षण विधि द्वारा यादृच्छिक प्रति चयन विधि का प्रयोग किया गया।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी –

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु प्रदत्तों का संकलन निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से किया गया।

(i) मध्यमान

(ii) प्रमाप विचलन

(iii) टी परीक्षण

शोध उपकरण –

प्रत्येक अनुसंधान के लिए नवीनतम दत्त संकलन हेतु कतिपय यंत्रों एवं उपकरणों की आवश्यकता होती है।

अतः प्रस्तुत शोधकार्य में समायोजन सूची हेतु मानकीकृत उपकरण एवं आत्मसन्तुष्टि मापन हेतु स्वनिर्मित उपकरण प्रयुक्त किये गये।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष–

शोध निष्कर्षों से शोधकर्ता को ज्ञात हुआ कि जिस स्तर तक दिव्यांग छात्र आत्मसन्तुष्ट है। इनके मध्य मामूली सा अन्तर है, यथा दिव्यांग छात्रों का प्रमाणिक विचन 7.403 है तथा दिव्यांग छात्राओं का प्रमाणिक विचलन 6.142 है। अतः अन्तर लगभग नगण्य है। अर्थात आत्मसंतुष्टि के विभिन्न स्तरों (क्षेत्रों) जैसे भावात्मक आत्मसंतुष्टि स्तर, विद्यालयी आत्मसंतुष्टि स्तर, पारिवारिक आत्मसंतुष्टि स्तर, आर्थिक आत्मसंतुष्टि स्तर आदि पर दिव्यांग छात्रों एवं दिव्यांग छात्राओं की आत्मसंतुष्टि का स्तर लगभग समान है, इनके मध्य कोई विशेष अन्तर नहीं है।

'राजस्थान राज्य के माध्यमिक स्तर के दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर में नगण्य अन्तर है, अर्थात दोनों समूह के समग्र समायोजन में कोई विशेष अन्तर नहीं है, वह लगभग समान है जिस स्तर तक दिव्यांग छात्र विभिन्न क्षेत्रों में समायोजित है, दिव्यांग छात्राओं के समायोजित होने का स्तर भी लगभग वही है, दोनों समूह गृह समायोजन, सामाजिक समायोजन, स्वस्थ्य व भावात्मक समायोजन एवं विद्यालयी समायोजन आदि विभिन्न क्षेत्रों में परिस्थितियों से संतुलन स्थापित करने में सक्षम है, साथ ही उनकी सक्षमता का स्तर भी लगभग समान है। दोनों समूह विभिन्न परिस्थितियों तथा क्षेत्रों में स्वंय

को समायोजित करने का प्रयास करते है, इनकी समायोजन क्षमता में बहुत ही अन्तर है।

उपसंहार

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने **राजस्थान राज्य के माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की आत्मसन्तुष्टि एवं समायोजन का अध्ययन"** विषय पर शोध कार्य किया हैं। इसमें अध्ययन का स्वरूप छोटा होने के कारण यह आवश्यक नहीं हैं कि परिणाम बिल्कुल खरे उतरे। फिर भी शोधकर्ता यह आशा करता हैं कि उसका यह छोटा सा प्रयास अन्य शोधकर्ताओं को इस क्षेत्र में कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करेगा। शोधकार्य को करते हुए शोधकर्ता ने जो कुछ भी अनुभव किया गया अथवा शोधकार्य को पूर्ण करने के उपरान्त वह जिस निष्कर्ष पर पहुँचा, उन अनुभवों एवं निष्कर्षो को शोध अध्ययन में प्रस्तुत किया गया हैं। जिनके ऊपर ध्यान दिया जाना शोधकर्ता के विचार से आज के परिवेश में नितान्त आवश्यक हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अरोड़ा रीता 2006, शिक्षा में नवचिन्तन
- अस्थाना विपिन (1994) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, (उत्तर प्रदेश)।
- अस्थाना श्वेता (2011) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा (उत्तर प्रदेश)।
- भटनागर आर.पी. बी.मीनाक्षी (1998) एज्येकेशन, रिजर्व इन्टरनेशनल पब्लिकेशर्स मेरठ।
- भटनागर आर.पी. (2003) शिक्षा अनुसंधान इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ 25001.
- चौबे, सरयु प्रसाद (1995) तुलनात्मक शिक्षा. आगराः विनोद प्रस्तक मंदिर।
- ढौढ़ियाल, एस., फाटक, ए. (2003). शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र जयपुर राजस्थान हिन्दी अकादमी।
- ढोंढियाल, एवं फाटक, ए.बी. (1996) शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र जयपुर राजस्थान हिन्दी अकादमी, पृ.92
- पाठक पी.डी (2009) शिक्षा मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
- रायजादा, वी.एस. (1997). शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व. जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
- रैना एम.के. 1999 एजुकेशनल रिसर्च अशीम प्रिन्टर्स दिल्ली।
- पारीक मथुरेश्वर – ''उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा''
- पाण्डेय रामशकल – ''भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास''

- शर्मा आर.के. – ''शिक्षा के उद्देश्य ज्ञान एवं पाठ्यचर्या''
- पाण्डे, रामशकल 2012, भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास
- शर्मा, ओ.पी. 2013–14, शिक्षा के दार्शनिक आधार
- डॉ. शर्मा रजनी 2006, शिक्षा एवं भारतीय समाज
- प्रो. पारीक मथुरेश्वर 2006, शिक्षा के नए आयाम